International Journal of Applied Research 2023; 9(5): 277-282

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 277-282
www.allresearchjournal.com
Received: 02-04-2023
Accepted: 10-05-2023

Balendra Kumar
Research Scholar, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

Dr. Arvind Kumar
Professor, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Balendra Kumar
Research Scholar, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में राहुल गांधी का उदय और उनकी नीतियां, उनका दृष्टिकोण और उनका राजनीतिक दर्शन

Balendra Kumar and Dr. Arvind Kumar

सारांश
राहुल गांधी, भारतीय राजनीतिक मंच पर एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में उभरे हैं। उनका उदय और उनकी नीतियां भारतीय राजनीति में एक नया दिशा-निर्देश स्थापित कर रहे हैं, जिसका गहरा प्रभाव देश की राजनीतिक दिशा पर हो रहा है। इस अध्ययन में हम राहुल गांधी के राजनीतिक उदय, उनकी नीतियों, उनके दृष्टिकोण, और उनके राजनीतिक दर्शन का विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे। राहुल गांधी का राजनीतिक उदय उनके नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी के विचारधारा में नए दृष्टिकोण और योजनाओं की प्रेरणा के रूप में उभरा है। उनकी नीतियां, जैसे कि न्यूनतम समर्थन मूल्य) न्यूनतम आय प्रोत्साहन(, किसानों के हित में नीतियां, और आर्थिक और सामाजिक विकास की योजनाएं, भारतीय राजनीतिक वातावरण को प्रभावित कर रही हैं।
राहुल गांधी का दृष्टिकोण एक समर्थ और सहयोगी भारत की रचना की दिशा में है, जो सभी समाज के लोगों के लिए समान अवसर और न्याय की एक नई परिभाषा प्रदान करता है। उनका राजनीतिक दर्शन भारतीय समाज के समृद्धि, सामाजिक न्याय, और सांघिक एकता के प्रति आदर्शात्मक है।
समापन रूप में, यह अध्ययन राहुल गांधी के राजनीतिक योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद करेगा और उनके विचारों और दृष्टिकोण के प्रति सामाजिक सचेतना को बढ़ावा देगा। इससे भारतीय राजनीतिक दर्शन में नई दिशा और दर्शन उत्पन्न हो सकते हैं, जो राष्ट्रीय विकास और सामाजिक समृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

कूट शब्द : समाज, युवा, प्रेरणा, संवेदनशीलता और सामाजिक

प्रस्तावना
इंदिरा की हत्या के बाद राहुल गांधी के मन में राजनीति के प्रति डर और विरोध पैदा हो गया। संभवतः राजीव गांधी की मृत्यु के बाद इसे और बल मिला। जब राहुल ने राजनीति में कदम रखा, तो इससे उनमें पदों और सत्ता के पदों के प्रति गहरी अनिच्छा पैदा हो गई।
राहुल ने अपनी राजनीति को 'सत्ता के पीछे जाने' के बजाय 'लोगों के लिए काम करने', 'गरीबों की मदद करने' और देश की सेवा करने' के संदर्भ में तैयार किया है। अमर्त्य सेन का मानना है कि जब 1990 के दशक के अंत में या 2000 के दशक की शुरुआत में दोनों की मुलाकात हुई तो राजनीति राहुल की योजनाओं का हिस्सा ही

नहीं थी। उन्हें लगा कि उस समय ये उनके 'वास्तविक विचार' थे और उन्होंने 'बाद में अपना विचार बदल दिया'।

यह संभव है कि राहुल अपने राजनीतिक संघों के स्वरूप और आकार के बारे में अनिश्चित थे। परिवार में सत्ता के पदों के प्रति अनिच्छा की पृष्ठभूमि को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। वर्षों से उन्होंने इसे कायम रखा है. जब उनसे पूछा गया कि 2004 में उनकी अमेठी जीत के बाद जब उनके समर्थकों ने उन्हें 'अगला सबसे अच्छा प्रधानमंत्री' बताया तो उन्हें कैसा लगा, उन्होंने कहा: 'कृपया इसे किसी भी प्रकार के अहंकार के रूप में न लें, लेकिन परिवार में पर्याप्त प्रधान मंत्री को देखा है...' ये इतनी बड़ी बात नहीं है. दरअसल, मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि देश की सेवा करने के लिए आपको किसी पद की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए।

अपनी मां की तरह, राहुल में भी अपने बड़े होने के दौरान राजनीति और राजनेताओं के प्रति थकान विकसित हो गई थी। उन्हें लगता था कि राजनीति उनके पिता के लिए 'खतरनाक' है। राहुल को राजनीति में जीवन जीने का इतना शौक नहीं था। हालाँकि, राजीव गांधी ने 1981 में अपनी माँ की 'मदद' करने के लिए राजनीति में प्रवेश करने वाले बेटे होने से एक लंबा सफर तय किया था। राजनीति में किसी भूमिका की अनिच्छा से लेकर पूर्ण स्वीकृति तक राहुल ने खुद भी ऐसा ही रास्ता तय किया है।

जब सोनिया ने राजनीतिक जीवन में कदम रखा तो राहुल उनके साथ चुनावी दौरों पर गए। उन दिनों उनकी भूमिका राजनीतिक से ज़्यादा निजी सहयोगी की थी, जो प्रियंका को सौंपी गई थी.

लेकिन 2004 में सोनिया को एक नियमित राजनीतिक सहयोगी की जरूरत थी. 2004 के चुनावों से पहले कांग्रेस के भीतर यह भावना थी कि अधिक 'प्रामाणिक' नेहरू-गांधी चेहरे से पार्टी को मदद मिलेगी। कांग्रेस नेताओं समेत सभी को उम्मीद थी कि आम चुनाव में बीजेपी की जीत होगी. जब उनकी बहन ने राजनीति से दूर रहने का फैसला किया, तो राहुल को लगा होगा कि उन्हें अपनी मां की मदद करनी होगी।

राहुल ने 2004 में राजनीति में प्रवेश किया जब उनकी मां को अपने बच्चों के समर्थन की जरूरत थी क्योंकि उनके विदेशी मूल के खिलाफ अभियान खत्म होने से इनकार कर रहा था। अपने बेटे को राजनीति में लाकर सोनिया नेहरू-गांधी वंश को आगे बढ़ा रही थीं. यह परंपरा इंदिरा के साथ शुरू हुई जो अपने दोनों बेटों को राजनीति में ले आईं। राहुल के लिए, अपने निकटतम परिवार के प्रति कर्तव्य की भावना राष्ट्र और कांग्रेस के प्रति कर्तव्य की व्यापक भावना से जुड़ी है, जो वह माध्यम है जिसके माध्यम से यह काम किया जाना है।

भारत लौटने के बाद पहली बार अमेठी दौरे पर उनसे पूछा गया कि राजनीति में शामिल होने के लिए उन पर पड़ने वाले भारी दबाव के बारे में वह क्या महसूस करते हैं। 'आपको इसे महसूस करना होगा, अगर आप इसे सही समय पर करना चाहते हैं, तो आप इसे करें... उन्होंने कहा, 'आप पर दबाव नहीं डाला जा सकता।' जब एक रिपोर्टर ने कहा कि वह स्पष्ट रूप से उन लोगों में से नहीं हैं जो राजनीति से विमुख हैं, तो राहुल ने कुछ सेकंड के लिए इसके बारे में सोचा। 'मुझे राजनीति से कोई परहेज नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं राजनीति में शामिल होने जा रहा हूं... मैं और मेरी बहन दोनों इसके बारे में सोचते हैं और हम इस पर चर्चा भी करते हैं। लेकिन हमने इस बारे में कोई फैसला नहीं किया है।

भारत के सामाजिक क्षेत्र में राहुल गांधी की भूमिका

जीवन के किसी भी क्षेत्र में विकास हमेशा नेतृत्व के व्यक्तिगत गुणों पर निर्भर करता है। नेतृत्व के गुण किसी देश के विकास को बढ़ावा देने में प्रमुख संसाधनों में से एक हैं। एक नेता वह व्यक्ति होता है जो उद्यम करता है, विकास के साधन के रूप में बदलाव को प्राथमिकता देता है और परिकलित जोखिम लेने के लिए तैयार रहता है। जोखिम लेते समय नेता सफलता की संभावनाओं के साथ-साथ विफलता के परिणामों से भी भली-भांति परिचित होता है।

भारत में व्यापक आधार वाले नेतृत्व की आवश्यकता समाज की जरूरतों के कारकों को सक्रिय करने की प्रक्रिया को तेज करने की आवश्यकता से उत्पन्न होती है, जिससे आर्थिक विकास की उच्च दर, आर्थिक गतिविधियों का फैलाव, पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों का विकास हो सके। सामाजिक सुरक्षा, महिलाओं को सशक्त बनाना, वृद्धि और विकास की प्रक्रिया में समाज के कमजोर वर्गों के जीवन स्तर में सुधार। राजनीति एवं देश के हितों की नीतियों के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक विकास एवं प्रगति में अनुकूल वातावरण का निर्माण होता है।

देश में बुनियादी सांस्कृतिक परिवर्तन की सख्त जरूरत है जो समाज, लोगों के रुझान और सशक्तिकरण पर जोर दे। सभ्यता के साथ नेतृत्व का विकास हुआ है। मनुष्य ने नेतृत्व के कौशल और उपकरणों की खोज की। अग्रिम रूप में नेतृत्व राजनीति की एक उत्कृष्ट कला बन जाती है। नेतृत्व संस्कृति पूर्णता के लिए स्व-इंजीनियरिंग की खोज पर बनी है।

राजनीति एक सतत प्रक्रिया है जो आर्थिक विकास को गति देती है और सामाजिक परिवर्तन लाती है। एक अच्छा नेता वह होता है जो लोगों में आत्मविश्वास पैदा करने में सक्षम होता है, और अपने द्वारा निर्धारित आर्थिक और सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उन्हें अपने साथ काम करने के लिए प्रेरित करने की क्षमता रखता है।

राजनीति में सफलता अर्जित करने के अलावा, युवा नेता जीवन में सफलता प्राप्त करने, अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार करने और सामाजिक मान्यता प्राप्त करने और समाज को कुछ प्रदान करने की अपनी सहज इच्छा को पूरा करने के लिए भी प्रेरित होता है। युवा नेता के प्रेरक कारक स्थान-दर-स्थान, समय-समय के साथ-साथ व्यक्ति-दर-व्यक्ति अलग-अलग होते हैं। फिर भी, प्रेरणा विभिन्न राजनीतिक लक्षणों को आकार देती है। सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि गुणों और प्रेरणाओं को आकार देती है। यह वास्तव में देश में नेतृत्व और नेताओं के विकास में एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। हालाँकि, नेतृत्व के लक्षण जटिल हैं, एक नेता का लक्ष्य नेतृत्व का निर्माण करना है ताकि समाज के लिए प्रगति हासिल की जा सके।

भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है. लेकिन आज हमारे सामने जो चुनौतियाँ हैं, वे ऐसी हैं जिनका सामना दुनिया के किसी भी देश ने कभी नहीं किया। इन सभी वर्षों में, जबकि हम अपने लोगों को उनके अधिकार देने का प्रयास कर रहे थे, पूरे देश में चीजें बिल्कुल विपरीत थीं। भारत की प्रमुख समस्या जो सदियों से चली आ रही है और आज भी बनी हुई है, वह है गरीबी और एससी/एसटी तथा समाज के निचले तबके के बीच आर्थिक असमानता की समस्या। इतनी बड़ी असमानता से समाज में तनाव होना स्वाभाविक है। एक प्रकार की शांति हो जो तेजी से आर्थिक प्रगति कर सके और गरीबी के खिलाफ शांतिपूर्ण तरीके से लड़ सके, इसके लिए प्रत्येक भारतीय को देश की नियति को आकार देने में हाथ बंटाना चाहिए।

ग्रामीण विकास एवं उत्थान

भारत में आज़ादी के छह दशकों के बाद भी ग्रामीण विकास सबसे बड़े मुद्दों में से एक है। यह हमारी सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों का भी एक प्रमुख अंग है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता संबंधी मुद्दों में सुधार सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। ग्रामीण विकास लोगों के एक विशिष्ट समूह, गरीब ग्रामीण महिलाओं और पुरुषों को अपने और अपने बच्चों के लिए वह सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम बनाने की एक रणनीति है जो वे चाहते हैं और जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

सामुदायिक और ग्रामीण विकास सामुदायिक स्तर पर विकासात्मक प्रयासों को कार्यान्वित, सहायता और समर्थन करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक विकास गतिविधि में मदद और प्रबंधन करेगा।

गरीबों और ग्रामीण उत्थान पर राहुल का इशारा प्रतीकात्मक है। राहुल हमेशा "एक असली नेता वह है जो सही समय पर सही निर्णय ले सकता है" के एजेंडे में विश्वास करते हैं। उन्होंने "इंडिया शाइनिंग" के नारे पर ध्यान केंद्रित किया और लोगों को यह अहसास कराया कि जब इस देश का गरीब आदमी भोजन, आश्रय और रोजगार के बिना दम तोड़ रहा है तो भारत कैसे चमक सकता है? राहुल का मानना है कि देश के विकास का असली श्रेय किसानों को जाता है। वह "सर्व शिक्षा अभियान", नरेगा... जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं को लागू करने के इच्छुक हैं। जिसका उद्देश्य एक औसत भारतीय के जीवन को बेहतर बनाना है।

राहुल वह व्यक्ति हैं, जो हमेशा गरीबों की मदद करते रहे हैं और उनका ध्यान गरीबों पर है, स्कूलों में मध्याह्न भोजन योजना, सूचना का अधिकार अधिनियम, सार्वभौमिक आईडी कार्यक्रम के संदर्भ में और वह आम आदमी की प्रगति पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। राहुल गांधी ने यह भी कहा कि वह लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में विश्वास करते हैं और ग्रामीण भारत के उत्थान और विकास के लिए युवाओं के माध्यम से लोकतंत्र लाने की कोशिश कर रहे हैं। वह महात्मा गांधी के शब्दों की याद दिला रहे हैं और यह संदेश दे रहे हैं कि भारत अपने गांवों में रहता है।

राहुल ने अमेठी में ग्रामीण विकास कार्यों की शुरुआत की और उन पर फोकस किया. उनका लक्ष्य शैक्षिक और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार करना था। उनका पसंदीदा प्रोजेक्ट एक शिक्षा योजना थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अमेठी के प्रत्येक युवा को मौलिक साक्षरता प्राप्त हो।

राहुल का दिमाग जिज्ञासु है और वह हमेशा शहरी और ग्रामीण भारत के बारे में पूछते रहते हैं। और वह एक महान श्रोता हैं,"[9] इंफोसिस के संस्थापक और राहुल गांधी के जन्मदिन के लिए 'छह सूत्री सामाजिक कार्य' एजेंडे के सूत्रधार एनआर नारायण मूर्ति कहते हैं।

राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले 2011 में उनका जन्मदिन इस तरह से मनाया गया था, जब यूपीसीसी द्वारा पार्टी के लोगों को भूमि अधिग्रहण के मुद्दे को भुनाने के लिए किसानों के बीच चौपाल आयोजित करके 'किसान अधिकार दिवस' आयोजित करने का निर्देश दिया गया था। पार्टी नेता को राहुल के जन्मदिन

समारोह के लिए छह सूत्री एजेंडा दिया गया था, जो 'सरल' लेकिन 'रचनात्मक' होना चाहिए और इसमें 'सामाजिक कार्य' शामिल होना चाहिए। इकाइयों को सेमिनार आयोजित करने, स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित करने, दलित बस्तियों में चौपाल आयोजित करने, मलिन बस्तियों को साफ करने, मरीजों के बीच फल वितरित करने और युवा विंग से जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए रचनात्मक विचारों के साथ आगे आने के लिए कहा गया था।[10] उन्होंने एक पदयात्रा की पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उन किसानों के साथ जो अपनी ज़मीन के लिए बेहतर मुआवज़ा चाहते थे। राहुल की टीम ने 'आंदोलन' के लिए समर्थन जुटाने के लिए भट्टा और पारसौल के जुड़वां गांवों के नाम पर एक वेबसाइट बनाई।

छुआछूत के खिलाफ लड़ो

उन्होंने अस्पृश्यता और अन्य सामाजिक बुराइयों के उत्पीड़न के खिलाफ किसी भी अन्य की तुलना में अधिक बहादुरी से लड़ाई लड़ी, जो भारतीय समाज पर एक कलंक है। उन्होंने कहा, छुआछूत सबसे बड़ी शर्म की बात है. इसका अपमान और भी गहरा होता जा रहा है. गीता का आदेश "ब्राह्मण" और "हरिजन" को समान मानना था।

राहुल ग्रामीण भारत के गांवों तक पहुंच रहे हैं और उन्हें एक बड़े मिशन में शामिल कर रहे हैं. भारत के विभिन्न गांवों और दूरदराज के हिस्सों में उनकी यात्राओं और सक्रिय भागीदारी से प्रशंसा हुई है। वह दलितों और गरीबों के घर जाकर काफी प्रभाव डाल रहे हैं।[21] राहुल गांधी ने मेंढ़की गांव में एक दलित परिवार के साथ रात में करीब दो घंटे तक खाना खाया और चौपाल लगाई।

पूर्व ब्रिटिश विदेश सचिव और लेबर सांसद डेविड मिलिबैंड ने जनवरी 2009 में भारत का दौरा किया, राहुल उन्हें सेमरा गांव में एक दलित महिला के घर पर रात भर रुकने और एक महिला स्वयं सहायता समूह के सदस्यों से मिलने के लिए अमेठी ले गए। वह उन्हें बड़े शहरों के भारत के बजाय ग्रामीण भारत की झलक दिखाना चाहते थे। 'मैंने सोचा कि विदेश सचिव के लिए ग्रामीण भारत में आना और यह देखना काफी दिलचस्प होगा कि यहां के लोग क्या कर रहे हैं और किस प्रकार की ऊर्जा प्रचलित है और भारत भविष्य में किस प्रकार की ऊर्जा का उपयोग करने जा रहा है', राहुल ने कहा.

विभिन्न स्तरों के लोगों के साथ राहुल की व्यक्तिगत भागीदारी और संपर्क तथा गरीबों और दलितों और समुदाय-आधारित समूहों के लगातार दौरे राजनीति और अन्य सामाजिक गतिविधियों में लोगों की भागीदारी पर उनके व्यक्तिगत प्रयास को दर्शा रहे हैं। राहुल गांधी "अनेकता में एकता" ढूंढ रहे हैं और तारामंडल में भी अपनी पहचान बढ़ा रहे हैं। वह अनुसूचित जातियों और जनजातियों और अन्य कमजोर वर्गों की या तो विशेष रूप से या उनके शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देने और सामाजिक विकलांगताओं को दूर करने के उद्देश्य से नागरिकों के रूप में उनके सामान्य अधिकारों पर जोर देकर रक्षा और सुरक्षा कर रहे हैं, जैसे सुरक्षा उपायों को बनाए रखने के अपने विचारों के साथ 'अस्पृश्यता' के उन्मूलन और उनके शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देने और सामाजिक अन्याय से उनकी सुरक्षा के रूप में।

तिरुवनंतपुरम में प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने एक दलित के घर के अपने दौरे के बारे में पत्रकारों से कहा: मैं इसे एक इंसान के घर जाने के रूप में देखता हूं, दलित के घर नहीं। मैं एक गरीब आदमी के घर जा रहा हूं, चाहे वह दलित हो या अल्पसंख्यक समुदाय या ऊंची जाति का हो। दलित तुम्हारा ढांचा है, मेरा नहीं। जहां आप उन्हें दलित के रूप में देखते हैं, वहीं मैं उन्हें गरीब व्यक्ति के रूप में देखता हूं।

राहुल गांधी अपनी भाषाई विरासत के जरिए भी विविधता में एकता तलाश रहे हैं. फिर भी वे हिन्दी से बहुत परिचित हैं। अपनी यात्राओं और भारत की खोज यात्रा के दौरान, वह सार्वजनिक बैठकों को संबोधित करते हुए स्थानीय भाषाओं में बोलकर लोगों को प्रभावित करते थे। उन्होंने विविधता में एकता की भावना विकसित करने के लिए पंजाब, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, असम और अन्य राज्यों का दौरा किया है। राहुल हमेशा प्रत्येक बैठक को स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा में उद्घाटन और समापन स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा में संबोधित करते थे। राहुल गांधी ने 18 जुलाई 2009 को गुवाहाटी की अपनी यात्रा के दौरान देश के बाकी हिस्सों से परिचित होने की आवश्यकता की पुष्टि की और बताया कि इससे किस प्रकार क्षितिज और साहसिक विचारों का विस्तार होगा। उन्होंने उत्तर-पूर्वी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की सराहना की और उत्तर-पूर्व भारत के युवाओं की अद्वितीय क्षमता और सेवा क्षेत्र में उनकी उत्कृष्टता पर भी प्रकाश डाला।

राहुल के धर्मनिरपेक्ष पहलू

भारत विश्व के लगभग सभी प्रमुख धर्मों की भूमि है। हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और फ़ारसी भारत के प्रमुख धर्म हैं। विभिन्न जातियों के बीच झड़पें, धार्मिक असामंजस्य की घटनाएं अक्सर भारतीय समाज को परेशान करती हैं। इतने मतभेदों के बावजूद भी बंधन और एकता देखी जाती

है। भारत में सभी धर्म एक साथ विद्यमान हैं। धर्म के क्षेत्र में अनेकता में एकता पाई जाती है। तीर्थयात्रा की संस्था, परस्पर निर्भरता की परंपरा, भावनात्मक बंधन जैसी कुछ प्रथाएँ सभी धर्मों में समान हैं।

"किसी ने एक बार मुझसे पूछा था; मेरा धर्म क्या था? मैंने इसके बारे में सोचा और मैंने उत्तर दिया कि भारतीय ध्वज मेरा धर्म है। मैंने अपने पिता की मृत्यु के बाद खुद से वादा किया था कि मैं लोगों की सेवा करूंगा, यह ध्वज दर्शाता है। नौकरी लेकर, इससे पहले कि मुझे पता चले कि हमारे कार्यकर्ता और लोग क्या महसूस करते हैं और उन्हें क्या चाहिए, मैं अपने धर्म और अपनी पार्टी दोनों का अहित कर रहा होऊंगा।''

"राहुल गांधी ने कहा कि देश के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने को संरक्षित करने की जरूरत है।"

चुनाव अभियान (2007) के तहत पश्चिमी यूपी में एक रोड शो उन्हें देवबंद के इस्लामिक सेमिनार में ले गया। उन्होंने घोषणा की: "मैं जाति और धर्म के प्रति अंधा हूं। अगर मैं एक आदमी को दूसरे आदमी को नुकसान पहुंचाते हुए देखूंगा, तो मैं वादा करता हूं कि मैं बीच में आऊंगा। कृपया याद रखें कि मैं इंदिरा गांधी का पोता हूं।

राहुल की भारत की खोज

राहुल ने भारत को फिर से खोजने की कोशिश की है. उनका दृढ़ विश्वास है कि ग्रामीण भारत में भारत के समग्र विकास की अपार संभावनाएं हैं। वह गांवों में जाते हैं, लोगों से जुड़ते हैं और वास्तविकता को स्वयं देखते हैं। वह प्रत्यक्ष जानकारी पर विश्वास करते थे। उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी नियति देश का नेता बनना है, इसलिए उन्होंने भारत की कठिन खोज का बीड़ा उठाया है। पिछले कुछ वर्षों से, किसी भी बड़े कद के राजनेता ने उस तरह का प्रयास नहीं किया है जैसा राहुल को भारत के कामकाज के बारे में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने के लिए करना पड़ा है। चाहे वह बुन्देलखंड के कठोर इलाके में गरीबों के साथ बिताई गई रात हो, या अमेठी और श्रावस्ती के सामाजिक रूप से बहिष्कृत दलितों के साथ किया गया भोजन हो, या बड़े शहरों में सामाजिक वैज्ञानिकों, कार्यकर्ताओं और विद्वानों के साथ सिर फोड़ना हो, राहुल का स्वयं घोषित उद्देश्य है "अंतिम दिन तक सीखना"। "उन्होंने पूरे अमेठी में कार्यकर्ताओं का एक नेटवर्क बनाया - 16 ब्लॉक, 160 न्याय पंचायत, 750 ग्राम सभा और 50 घरों के समूह के लिए 1 समूह।" उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं के लिए एक शिविर का आयोजन किया और उन्हें मुंबई और विदेशों के शीर्ष प्रबंधन विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित किया गया कि लोगों तक कैसे पहुंचा जाए। राहुल की 'भारत की खोज' का उद्देश्य दिल और दिमाग पर जीत हासिल करना और खुद को भविष्य के नेता के रूप में पेश करना और ग्रामीण भारत की खोज करना उनका मिशन था। ब्रिटिश विदेश सचिव डेविड मिलिबैंड को ग्रामीण गरीबों के कठिन जीवन के बारे में तब समझ में आया जब वह राहुल गांधी के साथ यूपी में एक दलित महिला की झोपड़ी में गए। राहुल न केवल युवाओं और वंचितों से जुड़ने के लिए ऐसा कर रहे थे बल्कि उन्हें सशक्तिकरण की भावना देने की भी कोशिश कर रहे थे। "मैं उसकी आँखों में उसके पिता का अधूरा एजेंडा देखता हूँ। वह एक आधुनिक भारत चाहते हैं, लेकिन ऐसा भी जो गरीबों के प्रति अधिक संवेदनशील हो,'' सैम पित्रोदा कहते हैं, जिन्होंने पिता और पुत्र दोनों के साथ काम किया है। राहुल गांधी का भारत, गांधीकाभारत.कॉम द्वारा संचालित एक पंजीकृत गैर सरकारी संगठन है, जो 1860 के सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 21 के तहत पंजीकृत है, जिसका उद्देश्य समाज के सदस्यों और सामान्य लोगों के बीच भाईचारे, सहयोग, आपसी सद्भाव, प्रेम और स्नेह की भावना पैदा करना है।

निष्कर्ष

राहुल गांधी का भारत ग्रामीण विकास, मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, शहरी विकास और संपत्ति उन्मूलन, पर्यावरण और वन संरक्षण और सूचना के अधिकार के विकास, कृषि कुटीर उद्योग विकास, मानवाधिकार संरक्षण, महिलाओं और बच्चों के मुद्दों, युवाओं के लिए काम करता है। , सांस्कृतिक और पर्यटन विकास, जल संरक्षण और प्रबंधन और संबंधित मुद्दे।

संदर्भ

1. पुनम, डॉ. (2018)। युवाओं की भूमिका: भारत के विकास के लिए एक एजेंट।
2. सिंह, डॉ. (2020)। सामाजिक एकता के विकास में युवाओं की भागीदारी की आवश्यकता।
3. माजिद, मुहम्मद और नसीर, हम्माद और तरीन, हन्नान खान और भट्टी, मुहम्मद और खान, मनान। (2021)। राजनीति में उभरते रुझान: सोशल मीडिया और युवाओं की राजनीतिक भागीदारी..
4. .एच, गोपी. (2023)। वैश्वीकृत भारत में युवाओं के अवसर और चुनौतियाँ।
5. जैन, मधुर और गुप्ता, पलक और आनंद, निकिता। (2020)। सामाजिक मुद्दों पर युवाओं की बदलती

मानसिकता में सोशल नेटवर्किंग साइटों का प्रभाव - दिल्ली-एनसीआर के युवाओं का एक अध्ययन।
6. सिंगारवेलु, गोविंदराजन। (2021)। विद्यालयों में राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन। पैरिपेक्स-इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च। 2. 2013.
7. राज.एम, कासिमिर। (2016)। इकाई । - भारत में युवा नीति की उत्पत्ति।
8. पिक्टुर्नाईटे, इल्विजा और कावोलियस, रोबर्टस और पॉउजुओलिएन, जुर्गिटा। (2022)। युवा नागरिकता की अभिव्यक्ति और इसे बढ़ावा देने वाले कारक। 168-175. 10.52320/svv.v1iVII.245.
9. रंगनाथन, सुंदरी और मनोज, सुश्री (2019)। उन्हें युवा पकड़ें: सामुदायिक विकास में शैक्षिक संस्थानों की भूमिका- चेन्नई में कॉलेज के छात्रों की धारणा पर एक वर्णनात्मक अध्ययन। जीआईएस व्यवसाय। 14. 170-182. 10.26643/gis.v14i6.11694.
10. बोर्गस्ट्रॉम, डेविड और कैंटो फराचला, मार्था और हेगन, आइना और नॉरवोल, रीडुन और रोडमार्क, लीना और लोरेंजेन, सारा और बुटकेविसिएन, ईगल और ब्रेटबक्क, इंगर और सीजेगलेडी, एलेक्जेंड्रा और फ्रेंको, सुज़ाना और डिट्रिच, इरीना और फ़्रीलिंग, इसाबेल और गट्टी , फ्लोरा और हसेविंकेल, मैरी-चार्लोट और हमर, फिलिप और केजेलक्विस्ट, टॉमस और लोरेंज, यूसुए और मैथेस, जोर्ग और मिहोक, बारबरा और ज़ाफ़्रा, असियर। (2024)। युवा नागरिक सामाजिक विज्ञान की पुस्तिका। सामाजिक परिवर्तन के लिए युवाओं और स्थानीय समुदाय के साथ कार्य करना। 10.5281/ज़ेनोडो.10566410.
11. बॉर्न, डगलस और ब्राउन, के. (2011)। युवा लोग और अंतर्राष्ट्रीय विकास: जुड़ाव और सीखना।